पाठ - 5

महाभारत काल के महर्षि

आपने 'महाभारत' का नाम सुना होगा। 'महाभारत' की कथाएँ अत्यधिक लोकप्रिय हैं। शायद आपने दूरदर्शन पर इसको देखा भी होगा। 'महाभारत' जैसे महाकाव्य के रचयिता महर्षि वेदव्यास थे।

महर्षि वेदव्यास

महर्षि वेदव्यास का जन्म यमुना नदी के किनारे एक छोटे से द्वीप में हुआ था। इनके पिता का नाम पराशर तथा माता का नाम सत्यवती था। व्यास के शरीर के रंग को देखते हुए इनका नाम कृष्ण रखा गया और द्वीप में पैदा होने के कारण इन्हंे द्वैपायन कहा गया।

आरंभ में वेद एक ही था। व्यास ने इसका अध्ययन किया। मंत्रों के आधार पर उन्होंने वेदों को चार भागों में वर्गीकृत किया। इस प्रकार ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद चार वेद हो गए। व्यास जी ने वेदों को नया स्वरूप दिया इसलिए वे वेदव्यास कहलाए।

महर्षि वेदव्यास विद्वान और तपस्वी थे। इनका सबसे महत्त्वपूर्ण ग्रंथ महाभारत है। महाभारत में 18 पर्व हैं। महाभारत को पाँचवाँ वेद भी कहा जाता है। महाभारत की रचना उन्होंने लोक कल्याण की भावना से की थी। कहा जाता है- महाभारत को लिखने के लिए गणेश जी से कहा गया। गणेश जी ने कहा "मेरी एक शर्त है, मेरे लिखते समय मेरी लेखनी (कलम) रुकने न पाए, यदि यह रुक गई तो मैं लिखना बंद कर दूँगा" व्यास जी ने कहा,

ठीक है। उन्होंने इस तरह के श्लोक बोले कि जितनी देर में गणेश जी श्लोक को समझ करके लिख पाते उतनी देर में व्यास जी अगला श्लोक सोच लेते।

महाभारत के माध्यम से महर्षि वेदव्यास ने मनुष्य को सदाचार, धर्माचरण, त्याग, तपस्या, कर्तव्यपरायण तथा भगवान की भक्ति का संदेश दिया है। इस ग्रंथ द्वारा वेदव्यास जी ने यह बताया है कि मनुष्य कठिनाइयों का सामना किस प्रकार कर सकता है और उन पर विजय कैसे प्राप्त कर सकता है। महाभारत के वन पर्व में उन्होंने लिखा है-
"मनुष्य के पास सुख के बाद दुःख और दुःख के बाद सुख क्रमशः वैसे ही आते हैं, जैसे रथ के चक्के की तीली घूमती रहती है"।

महाभारत के शांति पर्व में भीष्म द्वारा युधिष्ठिर को दिया गया उपदेश-

"तुम पुरुषार्थ के लिए प्रयत्नशील रहो, पुरुषार्थ के बिना केवल भाग्य के बल पर राजा उद्देश्य हीन हो जाता है। राजा आवश्यकतानुसार कठोरता और कोमलता का सहारा ले। राजा को अपने स्वार्थ के कार्यों का परित्याग कर देना चाहिए। उसे वही कार्य करना चाहिए जो सभी के लिए हितकारी हो"।

उस समय सभी व्यक्ति वेदों का पाठ नहीं करते थे। धीरे-धीरे ऐसे लोगांे की संख्या बढ़ती गई। व्यास ने विचार किया कि बहुत संख्या में लोग भारत की संस्कृति से अनजान हैं। वेदव्यास ने पुराणों का संकलन किया और सभी के लिए सहज और सरल रूप में पुराणों की रचना की। महर्षि वेदव्यास की प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं- महाभारत, अठारह पुराण तथा वेदांत दर्शन।

अष्टादशपुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम्।
परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्।।

अठारह पुराणों में व्यास जी के द्वारा दो महत्त्वपूर्ण बातें बताई गई हैं। परोपकार से पुण्य एवं दूसरों को पीड़ित करने से पाप की प्राप्ति होती है।

महर्षि सुपंच सुदर्शन

महाभारत काल में ही महर्षि वेदव्यास के साथ महर्षि सुपंच सुदर्शन का भी नाम लिया जाता है। वे एक वैष्णव संत थे। इनका जन्म लगभग 3290 ई0 पू0 फाल्गुन माह में कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी को वाराणसी में हुआ था। इनका बचपन का नाम सुदर्शन था। वे सुपंच के नाम से भी जाने जाते थे। सुपंच की शिक्षा-दीक्षा आचार्य करुणामय द्वारा हुई। इनका मन

बचपन से ही भक्ति में अधिक लगता था। वे दैनिक क्रियाओं को करने के बाद घंटांे भजन और पूजा में लगे रहते थे। गुरु करुणामय ने उनके इस भाव को देखकर उन्हें ज्ञान, नीति एवं अध्यात्म की विशेष शिक्षा दी थी।

विद्या प्राप्त करने के बाद सुपंच सुदर्शन भक्ति और सत्य की खोज में लग गए। दीन, असहायों की सहायता और साधु सेवा को उन्होंने अपने जीवन का परम उद्देश्य बना लिया।

महर्षि सुपंच उच्च कोटि के संत थे। उन्होंने जो शिक्षाएँ दीं वे आज भी ग्रहण करने योग्य हैं-

ईश्वर से डरो इन्सान से नहीं।
बुद्धि, बल, रूप, सौंदर्य, धन का घमंड मत करो।
सदैव दूसरों का उपकार करो।
स्वाभिमान की हर कीमत पर रक्षा करो।
संसार का सुख भोगने में ही मत लगे रहो।
पारलौकिक आनंद की प्राप्ति का भी प्रयास करो।

महर्षि सुपंच सुदर्शन के आराध्य देव भगवान श्रीकृष्ण थे। इनका सारा जीवन परोपकार को समर्पित था। दीन, दुःखी व असहाय जन उनके पास शरण पाते थे।

महर्षि सुपंच सुदर्शन का आश्रम इटावा जनपद के पंचनदा टीले पर स्थित है।

अभ्यास

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1.महर्षि व्यास का नाम वेदव्यास क्यों पड़ा ?
2.व्यास जी ने पुराणों में कौन-सी महत्त्वपूर्ण बातें बताई हैं ?
3.वेदव्यास ने किन ग्रन्थों की रचना की ?
4.महाभारत की रचना किसने की और लिखा किसने ?
5.महर्षि व्यास ने महाभारत की रचना किस उद्देश्य से की थी ?
6.महर्षि सुपंच सुदर्शन ने लोगों को क्या शिक्षा दी ?
7. सही (√) अथवा गलत (x) का निशान लगाइए -

महर्षि वेदव्यास ने पुराणों का संकलन किया ।
महर्षि वेदव्यास का प्रसिद्ध ग्रंथ गीता है।
श्रीकृष्ण के उपदेश पुराणों में वर्णित हैं।
महर्षि सुपंच सुदर्शन भक्ति-भाव व शांति की खोज में लग गए।

8. नीचे दिए गए प्रश्न का सही उत्तर चुन कर लिखिए-

गुरु करुणामय ने सुपंच सुदर्शन को ज्ञान और नीति की शिक्षा दी क्योंकि-
(क) वे संत थे। (ख) वे गुरु का आदर करते थे।
(ग) वे भजन पूजा में लगे रहते थे। (घ) वे विद्वान थे।

योग्यता विस्तार

गाँव या मुहल्ले के समुचित विकास के लिए आप लोगों को क्या-क्या संदेश देंगे ? कम से कम पाँच संदेश अपनी कॉपी में लिखिए।